नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी "बी"
महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर
स्थापित २००५ ई.
7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

पत्रांक..... दिनांक : 05-10-2019

प्रकाशनार्थ

(राष्ट्रीय संगोष्ठी उद्घाटन समारोह)

सम्पूर्ण विश्व और सृष्टि में ऊर्जा का महत्व सर्वाधिक है। ऊर्जा उत्पादन और सरंक्षण इस दृष्टि अपने आप में अत्यन्त सवेदनशील विषय हो जाता है। ऊर्जा के परम्परागत स्त्रोतो की भूमिका भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। भारत सहित दूनिया के देश ऊर्जा उत्पादन और संरक्षण के लिए निरन्तर प्रत्यनशील है। वैकल्पिक ऊर्जा की भूमिका विज्ञान एवं तकनीकि युग में बहुत प्रभावी हुयी है। **वैकल्पिक ऊर्जा के स्त्रोतो को और व्यापक एवं परिष्कृत करना होगा।** मानव जीवन के लिए ऊर्जा की महत्ता असदिग्ध है लेकिन उसके अन्धाधुंधस प्रयोग से और मानव जीवन के लिए संकट भी उतना ही बड़ा खड़ा हुआ है। सोलर ऊर्जा, जल संरक्षण, हरियाली के माध्यम से हम वैश्विक स्तर पर ऊर्जा का उत्पादन, सन्दोहन और संरक्षण को सही दिशा दे सकते है। परिवहन के साधनों का अत्यन्त तेजी के साथ विस्तार से ऊर्जा संकट में बढ़ोत्तरी हुयी है। मानवता के उत्थान और विकास के लिए ऊर्जा संदोहन का सहयमित प्रयोग पर म आवश्यक है। उक्त बातें **महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर मे भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद नई दिल्ली** द्वारा प्रायोजित एवं भूगोल विभाग द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन अवसर पर बोलते हुए महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी के **पूर्व कुलपति एवं सर्वे ऑफ इण्डिया के पूर्व महासर्वेक्षक प्रो. पृथ्वीश नाग** ने कही।

प्रो. नाग ने उद्घाटन समारोह में आगे बोलते हुए कहा कि दक्षिण एशियाई देशों में ऊर्जा की जो चुनौतियाँ है उनका समाधान में भारत की भूमिका भी सर्वाधिक है। इसके लिए व्यक्तिगत स्तर से लेकर सरकारों तक की भूमिका सर्वव्यापक है। इसके लिए ऊर्जा केन्द्रों का बनाया जाना चाहिए। भारत उपमहाद्वीप में अफगानिस्तान, पाकिस्तान, नेपाल भूटान, बांग्लादेश सहित दक्षिण एशियाई देशों ऊर्जा उपयोग और उत्पादन में व्यापक अन्तर है। दक्षिण एशियाई के ये देश विशेष रुप से पेट्रोलियम ऊर्जा के लिए खाड़ी देशों पर पूरी तरिके से आत्म निर्भर है। बहुत आवश्यक है ऊर्जा के क्षेत्र में भारत को आत्मनिर्भर बनाया जाना। हमारी सम्पूर्ण संस्कृति और परम्परा में प्राचीन काल से ही ऊर्जा को महत्वपूर्ण स्थान रहा है। भारतीय जीवन पद्धति ऊर्जा के सयंमित प्रयोग और व्यापक संरक्षण वाली रही है।

उद्घाटन समारोह के अध्यक्षता करते हुए मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय गोरखपुर के **कुलपति प्रो. श्रीनिवास सिंह** ने कहा कि ऊर्जा संरक्षण और संदोहन को लेकर आज सम्पूर्ण संसार जागृत हुआ है। यह सन्तोष एवं हर्ष का विषय है कि मात्र तकनीकी क्षेत्र वाले ही ऊर्जा का प्रयोग नहीं कर रहे है बल्कि आमजन भी जागृत हुआ है। **ऊर्जा के बगैर जीवन की कल्पना करना सम्भव ही नहीं है।** ऊर्जा की भूमिका सर्वव्यापक भी है शक्तिमान और उपयोगी भी है। ऊर्जा के सुदृढ़ एवं सार्थक उपयोग की बड़ी भूमिका है। **ऊर्जा के विनाशकारी प्रयोग से न केवल सावधान रहने की आवश्यकता है** बल्कि किसी भी कीमत पर उसकी सुरक्षा की पुख्ता व्यवस्था होनी ही चाहिए। उन्होंने मानव जीवन में ऊर्जा की महत्वपूर्ण भूमिका का उल्लेख करते हुए कहा कि ऊर्जा के विभिन्न स्वरूप हमे दैनन्दिन जीवन में दिखायी देते हैं। ऊर्जा रूपान्तरण द्वारा ऊर्जा के समुचित प्रयोग का प्रशिक्षण विशेष रूप तृतीय विश्व के देशों के लिए महत्वपूर्ण है। जल जो ऊर्जा का एक बेहतरीन स्त्रोत है उसका सदुपयोग और उसे प्रदुषण मुक्त रखना वर्तमान समय में बड़ी चुनौती है। 'ऊर्जा संकट' के समाधान के लिए उपयोगी तकनीक और शोध की प्रवृत्ति का विकास बहुत सार्थक कदम होगा। ऊर्जा के स्त्रोंतों का निर्माण और उसके प्रयोग से इलेक्ट्रानिक कचरा एक नयी चुनौती बनता हा रहा है। इलेक्ट्रानिक कचरों का मानव जीवन पर बहुत ही नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

उद्घाटन समारोह में बीज वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के **प्राणि विज्ञान विभाग के पूर्व अध्यक्ष एवं प्रतिष्ठित वैज्ञानिक प्रो. दिनेश कुमार सिंह** ने कहा कि जनसंख्या, समृद्धि और प्रदुषण ने इस धारणा को आगे बढाया है कि **विश्व में ऊर्जा के दोहन के साथ–साथ चिंतन करने की व्यापक आवश्यकता है।** भौतिकवादी जीवन में सुख–सुविधा हेतु जनसंख्या के बड़े भाग ने नित–नये अविष्कारों द्वारा विभिन्न वस्तुओं का निर्माण तो किया संसार में समृद्धि भी आयी लेकिन उसके साथ व्यापक पैमाने पर प्रदुषण और खतरों ने भी जन्म लिया। इन चुनौतियों के समाधान के लिए वैज्ञानिक से लेकर आमजन तक राजनेता से लेकर सरकार तक न केवल चिन्तित है वरन् उसके निदान के प्रयास भी ढूढे जा रहे है वैश्विक स्तर पर ऊर्जा उत्पादन संदोहन और उसका संरक्षण एक महत्वपूर्ण विषय बनकर उभरा है। ऊर्जा संकट ने विश्व का ध्यान अपनी और आकृष्ट किया है।

नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी "बी"
महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर
स्थापित २००५ ई.
7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

हमें हवा पानी और सौर ऊर्जा की क्षमता का समुचित संदोहन करके ऊर्जा को संजोते हुए आगे बढ़ना है। विशेष रूप वैकल्पिक स्त्रोत के विकल्प को महत्वपूर्ण स्थान देना होगा।

उद्घाटन समारोह में विशिष्ट अतिथि विश्वविद्यालय के भूगोल विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. जे. एन. पाण्डेय, विभागाध्यक्ष प्रो. एस. के. सिंह एवं टीम. एम. भागलपुर विश्वविद्यालय के प्रो. एस. एन. पाण्डेय उपस्थित रहे। इस अवसर पर प्रो. एस. के. दीक्षित, प्रो. बी. के. श्रीवास्तव, प्रो. रविशंकर सिंह, प्रो. विनोद कुमार सिंह, प्रो. आर. डी. राय, प्रो. हिमांशु पाण्डेय, डॉ. राजेन्द्र भारती, डॉ. के. सुनिता, डॉ. मनोज तिवारी, डॉ. अर्चना सिंह, इंजीनियर पी.के मल्ल, डॉ. रेखा तिवारी, डॉ. प्रमोद कुमार, डॉ. सुनील कुमार प्रसाद, डॉ. अरविन्द कुमार, डॉ. नरेन्द्र कुमार शर्मा सहित विभिन्न विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालायों के प्रतिभागी के अलावा महाविद्यालय के शिक्षक, कर्मचारी तथा विद्यार्थी उपस्थित रहे। इससे पूर्व उद्घाटन समारोह का शुभारम्भ प्रार्थना सभा में राष्ट्रगान, सरस्वती वन्दना, कुलगीत, एकल गीत एवं कार्यक्रम का समापन वन्देमातरम् के साथ सम्पन्न हुआ। अतिथियों का उत्तरीय एवं स्मृति चिह्न प्रदान कर प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार राव ने स्वागत किया। आभार ज्ञापन संगोष्ठी संयोजक डॉ. विजय कुमार चौधरी एवं संचालन डॉ. अजय निषाद ने किया।

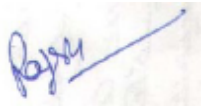

(डॉ. राजेश शुक्ला)
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी